P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता

कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक निदेशक,
सह बाल विकास परियोजना अधिकारी,
महिला एंव बाल विकास विभाग,
कल्याणपुर, बाडमेंर, राजस्थान

सारांश

भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात अपनी विदेश नीति का आधार गुटनिरपेक्षता बनाया जो 1991 में सोवियत संघ के पतन और शीतयुद्व के अतं तक बनी रही लेकिन 1991 के बाद बदलती वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियो को देखते हुए भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति के उद्देश्य को बनाये रखा साथ ही साथ अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए विश्व के सभी देशो और गुटो से भी सबंध स्थापित किये।

मुख्य शब्द : अंतराष्ट्रीय राजनीति, गुटनिरपेक्षता।

प्रस्तावना

अंतराष्ट्रीय राजनीति में एक राज्य अन्य राज्यों के साथ अपने संबधो के निर्वाह में जिस नीति का अनुसरण करता है, उसे सामान्यतः उस देश की विदेश नीति कहते है किसी भी राज्य की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितो के सरक्षंण एवं सवर्द्धन का काम करती है विदेश नीति किसी भी देश के आंतरिक हितो एवं नीतियों का अंतराष्ट्रीय प्रक्षेपण होती है ।[1]

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य भारत की विदेश नीति के प्रमुख आधार के रूप में गुटनिरपेक्षता तथा भारत की विदेश नीति के बदलते हुए स्वरू‭ को प्रदर्शित करना है।

साहित्यावलोकन

बी.पी.दत (2004) अपनी पुस्तक इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी इन ए चेजिंग वर्ल्ड में कहते है कि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियो में अपने राष्ट्र हित को ध्यान में रखते हुए भारत ने अपनी विदेश नीति के स्वरूप में परिवर्तन किया है।

रमेश ठाकुर (1992) अपनी कृति इण्डिया आफ्टर अलायनमैन्ट में कहते है कि भारत को अपने क्षेत्रीय संबधो पर बहुत कार्य करने की जरूरत है।

गुटनिरपेक्षता

द्वितीय विश्व युद्व के बाद अंतराष्ट्रीय राजनीति के स्वरुप में परिर्वतन लाने वाले तत्वों में गुटनिरपेक्षता का विशेष महत्व है गुटनिरपेक्षता की उत्पति का कारण कोई संयोग मात्र नही था, अपितु यह सुविचारित अवधारणा थी इसका उद्‌देश्य नवोदित राष्ट्रो की स्वाधीनता की रक्षा करना एवं युद्व की संभावनाओं को रोकना था इसके पीछे मूल धारणा यह थी कि साम्यवाद और उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने वाले देशो को शक्तिशाली युद्वो से अलग रखकर उनकी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा जावे।[2]

द्वितीय विश्व युद्व के बाद विश्व दो विरोधी गुटो सोवियत गुट और अमेरिकी गुट में विभक्त हो चुका था और दूसरी तरफ एशिया एवं अफ्रीका के नव स्वतंत्र राष्ट्रो का स्वतंत्र अस्तित्व उभरने लगा था ऐसे में इन नवोदित राष्ट्रो ने दोनो गुटो से अलग रहकर अपनी विदेश नीति को स्वतंत्र रुप से संचालित करने पर बल दिया, यहीं से गुट निरपेक्षता की नीति की शुरुआत हुई। भारत में जवाहर लाल नेहरु, मिस्त्र के राष्ट्रपति नासिर तथा युगोस्लाविया के मार्शल टीटो ने गुट निरपेक्षता की इस अवधारणा को काफी मजबूत बनाया।[3]

विदेश नीति का वह मूल सिद्वान्त जिसके अन्तर्गत कोई देश अपने को शीतयुद्व, गुटबाजी तथा सैन्य संधियों से दूर रखते हुए अंतराष्ट्रीय संबधो में अपने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितो तथा शांति व सुरक्षा के अंतराष्ट्रीय उद्‌देश्य की मांग, दोनो के आधार पर सक्रिय रुप से भाग लेता है, गुट निरपेक्षता कहलाती है। दूसरे शब्दो में गुट निरपेक्षता का अर्थ है गुटो से दूर रहते हुए स्वतंत्र रुप से अपनी विदेश नीति को संचालित करना।[4] गुटनिरपेक्षता की नीति का महत्व इससे परिलक्षित होता है जहां 1961 के प्रथम गुटनिरपेक्ष सम्मेलन बेलग्रेड शिखर सम्मेलन मे भाग लेने वाले गुट निरपेक्ष देशो की संख्या 25 थी जो आज बढ़कर 125 हो गई है।

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता

गुट निरपेक्षता की नीति भारत की विश्व को देन है भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने 1946 में नई दिल्ली में एशियाई विकासशील देशो का सम्मेलन बुलाया इसी सम्मेलन में गुट निरपेक्ष नीति तृतीय विश्व के देशों की विदेश नीति का आधार बनी और गुट निरपेक्ष आंदोलन विश्व आंदोलन में परिणत हुआ। इसी सम्मेलन में जवाहर लाल नेहरु ने कहा कि स्वतंत्र भारत अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में एक स्वतंत्र नीति का अवलबन करेगा और किसी गुट में सम्मिलित नही होगा। [5] भारत संसार के किसी भी भाग में उपनिवेशवाद और प्रजातीय विभेद का विरोध करेगा और विश्व शांति के समर्थक देशों के साथ सहयोग करेगा।

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने के कारण[6]:

1. भारत किसी भी गुट में शांमिल होकर विश्व मे तनाव की स्थिति पैदा करना उपयुक्त नही मानता।
2. भारत अपने विचार प्रकट करने की स्वाधीनता को बनाये रखना चाहता है यदि उसने किसी गुट विशेष को अपना लिया तो उस गुट के नेताओं को दृष्टिकोण भी उसे अपनाना पड़ेगा।
3. भारत अपने आर्थिक विकास के कार्यक्रमो को और अपनी योजनाओं की सिद्वि के लिए विदेशी सहायता पर बहुत कुछ निर्भर है और गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाने से सोवियत संघ तथा अमेरिका दोनो से एक साथ सहायता मिलती रही है।
4. भारत की भौगोलिक स्थिति गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाने को बाध्य करती थी। साम्यवादी देशो से हमारी सीमाएं टकराती थी अतः पश्चिमी देशो के साथ गुटबंदी करना विवेकसम्मत नही था। पश्चिमी देशो से विशाल आर्थिक सहायता मिलती थी अतः साम्यवादी गुट में सम्मलित होना भी बुद्विमानी नही थी।

शीतयुद्व के युग मे भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता

प्रारंभिक वर्षो में गुटनिरपेक्षता की भारतीय नीति बड़ी अस्पष्ट थी इस काल मे भारत की प्रवृति अंतराष्ट्रीय मामलो में पश्चिमी गुट की तरफ झुकी हुई थी लेकिन 1950–57 के वर्षो मे भारत के अमेरिका के साथ संबधो मे कटुता आने लगी एवं सोवियत संघ से भारत की नजदीकिया बढ़ने लगी। 1957–62 के वर्षो में भारत की विदेश नीति पुनः पश्चिमी गुट की ओर झुकने लगी। [7] 1962 में चीनी आक्रमण के समय गुट निरपेक्षता की नीति की काफी आलोचना हुई और कहा गया कि यदि भारत पश्चिमी गुट के साथ होता तो चीन भारत पर हमला करने की हिम्मत नही करता। मोरारजी देसाई की सरकार के समय में कहा गया कि असली गुट निरपेक्षता की नीति मोरारजी देसाई ने ही अपनाई क्योकि उन्होने सोवियत संघ और अमेरिका दोनो के साथ अपने संबधो को संतुलित करके गुटनिरपेक्षता की नीति को कायम रखा। 1980 के बाद भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को प्रखरता के साथ अपनी विदेश नीति में शामिल किया भारत ने 1983 में नई दिल्ली में गुट निरपेक्ष देशो का सांतवा शिखर सम्मेलन आयोजित करके विश्व स्तर पर भारत गुट निरपेक्ष आंदोलन का प्रमुख प्रवक्ता बन गया।[8]

शीत युद्वोतर युग में भारतीय विदेश नीति में गुट निरपेक्षता

1991 में सोवियत संघ के पतन के साथ शीतयुद्व का अंत हो गया था इसके साथ ही कुछ आलोचको ने यह कहा कि अब गुटनिरपेक्षता की नीति अप्रांसगिक हो गई है क्योंकि जब गुट ही नही रहे तो फिर गुट निरपेक्षता का कोई अर्थ नही रह गया है।[9]

निष्कर्ष

भारत ने 1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाई क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियों में भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार नगण्य था तथा देश में भुगतान संतुलन की समस्या उत्पन्न हो गई थी उसी समय सम्पूर्ण विश्व में एक नई लहर उत्पन्न हो रही थी जिसमें राजनीतिक मुद्दों की जगह अब आर्थिक मुद्दे ले रहे थे। वैश्वीकरण के इस दौर में नये नये आर्थिक समूहो का विकास हो रहा था जैसे एपेक, नाफटा, युरोपीय संघ, आसियान इत्यादि। ये आर्थिक समूह देशो के आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है ये आर्थिक विकास के द्वारा राजनीति मुद्वो को सुलझाने पर बल देते है भारत ने तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए सभी देशो से तथा सभी आर्थिक समूहो से संलग्न होने की नीति को अपनाया तथा अपनी विदेश नीति को आदर्शवाद से हटाकर यथार्थवाद की तरफ मोडा ऐसे समय में राष्ट्रीय हित और राष्ट्र विकास को देखते हुए भारत ने विश्व के सभी देशो के साथ संबध कायम किये।[10]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महेन्द्र कुमार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्वान्तिक पक्ष, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कपंनी पब्लिशर्स, पृ.सं. 14–2017*
2. *पीटर बिलेटस, दि नॉन अलाइन्ड मुवमेंट दि ओरिजिन ऑफ ए थर्ड अलायंस, एफ पिंटर पब्लिकेशन, पृ.सं. 98 – 1978*
3. *रॉय ऐलिसन, द सोवियत यूनियन एण्ड दि स्टेटजी ऑफ नॉन अलायमैन्ट इन द थर्ड वर्ल्ड, कैम्बिज यूनिवर्सिटी प्रेस पब्लिकेशन, पृ.सं. 127 – 1967*
4. *पॉल ऑफ पॉवर, इण्डियन नॉन अलायनमैन्ट पॉलिसीः स्ट्रेन्थन्स एण्ड वीमनेसेस, डी.सी.हेथ एण्ड कपंनी पब्लिशर्स, पृ.सं. 73 – 1967*
5. *बी आर नंदा, इण्डियन फॉरेन पॉलिसी दि नेहरू ईयर, विकास पब्लिशिग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, पृ.सं. 26 – 1976*
6. *बी.एन.खन्ना, लिपाक्षी अरोडा, भारत की विदेश नीती, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लिमिटेड, जयपुर , पृ.सं. 54 – 2009*
7. *वी.पी.दत, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी इन ए चेजिंग वर्ल्ड, यूबीएस पब्लिशर्स, पृ.सं. 34 – 2004*
8. *डा0 प्रमिला श्रीवास्तव, नॉन अलाइन्ड मूवमेंट : एक्सटेडिंग फ्रंटियर्स ,कनिष्का पब्लिशर्स नई दिल्ली, पृ.सं. 203 – 2001*
9. *रमेश ठाकुर, इण्डिया आफ्टर नॉन अलायनमैन्ट, काउंसिल ऑन फॉरेन दिलेशन्स पाब्लिशर्स, पृ.सं. 143 – 1992*
10. *मोहनन बी.पिल्लाई, एल.प्रेमशेखर, फॉरेन पॉलिसी ऑफ इण्डियाः कटिन्यूटी एण्ड चेंज, न्यू सेचुंरी पब्लिकेशस पृ.सं. 68 –2010*